शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १९ : अंक ३ : नई दिल्ली : २१-२७ अप्रेल २०१३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ३७ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४१, सर्व ७८ का गांधीधाम से वाव की ओर विहार हो गया है। पूज्यप्रवर १० मई को वाव पधारेंगे। वहां १३ मई को अक्षय तृतीया का पावन समायोजन होगा। १५ मई को पूज्यप्रवर वाव से राजस्थान की ओर विहार करते हुए २२ मई को राजस्थान की सीमा में प्रवेश करेंगे।

'मेरं सरणं गच्छामि' विषय पर पूज्यप्रवर का पावन संबोध

आर्हत् वाङ्मय में कहा गया है--**असंजमं परियाणामि संजमं उवसंपज्जामि।** साधक यह प्रतिज्ञा करता है और प्रायोगिक रूप में उसे करना भी चाहिए--मैं असंयम को छोड़ता हूं और संयम को स्वीकार करता हूं। दो प्रकार की परिज्ञा होती है--ज्ञ परिज्ञा और प्रत्याख्यान परिज्ञा। ज्ञ परिज्ञा है विश्लेषणपूर्वक अच्छी तरह जान लेना।

दूसरी परिज्ञा है--प्रत्याख्यान परिज्ञा। जो छोड़ने लायक है, उसे छोड़ देना प्रत्याख्यान परिज्ञा है। हमारी दुनिया में अनेक चीजें हेय होती हैं, छोड़ने लायक होती हैं। उन्हें छोड़ देना ही श्रेयस्कर है। अनेक चीजें उपादेय होती हैं, ग्रहण करने लायक होती हैं, उन्हें यथासंभव ग्रहण करने का, स्वीकार करने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञेय सब कुछ है, यहां तक कि हेय भी ज्ञेय है। हेय को भी जान लेना चाहिए और उपादेय को भी जान लेना चाहिए। हेय को इसलिए जान लेना चाहिए, जिससे जानने के बाद उसे छोड़ा जा सके। व्यक्ति जानेगा ही नहीं तो छोड़ेगा कैसे? इसलिए हेय को भी जान लेना चाहिए कि वह छोड़ने लायक क्यों है? उसे जान लेने के बाद फिर ग्रहण करने लायक क्या है, उसे भी जानकर ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए।

नौ तत्त्वों में हेय भी हैं, उपादेय भी हैं और ज्ञेय भी हैं। पुरानी भाषा में इन्हें छांडवा जोग, आदरवा जोग, जाणवा जोग कहा जाता था। जब मैं तत्त्वज्ञान का विद्यार्थी था, तब छांडवा जोग, आदरवाजोग जाणवा जोग वाली भाषा चलती थी।। आजकल के हमारे मुनि इन शब्दों को शायद जानते भी नहीं होंगे। संस्कृत और परिष्कृत हिन्दी भाषा में इन्हें हेय, ज्ञेय, उपादेय कहा गया।

असंयम हेय है। उसे छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। संयम उपादेय है, उसको ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। आज का निर्धारित प्रवचन विषय है--**मेरं सरणं गच्छामि**--मैं मर्यादा की शरण में जा रहा हूं। हमारे धर्मसंघ में प्रतिवर्ष मर्यादा महोत्सव का आयोजन होता है। यह एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है, समारोह कोई मनाए, न मनाए, वह इतनी महत्त्वपूर्ण बात नहीं। महत्त्वपूर्ण बात है मर्यादाओं के प्रति निष्ठा होनी चाहिए। समारोह मर्यादाओं को पुष्ट बनाने का एक माध्यम बन सकता है। मर्यादाएं शास्त्रीय भी होती हैं और साम्प्रदायिक भी होती हैं।

शास्त्रीयाः साम्प्रदायिक्यो मर्यादा निर्मिता मताः।
तास्ताः प्राणाधिका मत्वा, वर्तितव्यं सदा बुधैः।।

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव तुलसी ने कहा है--मर्यादाएं शास्त्रीय हों या संघीय उनका सम्मान रखना चाहिए। उनकी अवहेलना नहीं की जानी चाहिए। हमारे पूर्वजों, आचार्यों और हमारे व्यवस्थापक वर्ग ने

जो मर्यादाएं बनाई हैं, उनका हम सम्मान करें। हां, जहां लगे कि यह मर्यादा कृतकृत्य हो गई है, इस मर्यादा की उपयोगिता अब नहीं रही है तो उस पर विचार किया जा सकता है। उस पर तटस्थ चिंतन किया जाना चाहिए, समीक्षा की जानी चाहिए कि जो मर्यादा उपयोगिताशून्य हो गई है, उसे लागू रखना कहां तक समीचीन है? आचार्य जिस मर्यादा को चिंतनपूर्वक हटा दें, निराकृत कर दें, फिर उस मर्यादा के पालन की अपेक्षा नहीं रहती है। हालांकि हटाने की बात तो खास करके संघीय, साम्प्रदायिक मर्यादाओं में ही ज्यादा संभव है। सम्प्रदाय की जो मर्यादाएं काम की न लगें, उन पर चिंतन, समीक्षण करके आचार्यों के द्वारा उनको अप्रभावी किया जा सकता है।

मर्यादाएं हमारी आब को बढ़ाती हैं, हमारे संयम की सुरक्षा में सहयोग देती हैं। ये प्राकार हैं, संयमरूपी दुर्ग की प्राचीर हैं, लक्ष्मणरेखा हैं। हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम मर्यादाओं के भीतर रहने का प्रयास करें। मर्यादाओं से आदमी की गुणवत्ता बढ़ती है, उपयोगिता बढ़ती है। हमें अपनी निर्धारित मर्यादाओं के पालन के प्रति सतत सावधान रहना चाहिए। हमारे धर्मसंघ की अनेक मर्यादाएं हैं। उनमें कुछ मौलिक हैं। मेरे चिंतन के अनुसार संगठन की मर्यादाओं में 'सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें' यह सर्वोपरि मर्यादा है। महाव्रतों की मर्यादाएं तो शास्त्रीय हैं, संगठन की मर्यादाओं में मेरे खयाल से यह सबसे बड़ी मर्यादा है। संघ में, संगठन में आचार्य एक ही हों, दो नहीं। ऐसा नहीं कि कुछ साधु अमुक को आचार्य मानेंगे, कुछ साधु किसी अन्य को आचार्य मानेंगे, ऐसा नहीं। आचार्य मात्र एक और सब उनके शिष्य हों। आज्ञा मात्र एक आचार्य की चले, दो-तीन या चार की नहीं। यह हमारे संगठन की सिरमौर मर्यादा है।

हमारे संगठन की अन्य मौलिक मर्यादा है--साधु-साध्वियां विहार, चतुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें। विहार चतुर्मास किधर करना, यह निर्देश आचार्यों के द्वारा होता है। उस निर्देश का सम्मान होता है और होना भी चाहिए। इस बात के प्रति निष्ठा हो कि बस, हमें तो जो आचार्य की आज्ञा हो गई, उधर ही विहार करना है। जहां के लिए आज्ञा है, वहां जाकर डेरा जमाना है, वहीं चतुर्मास करना है। जिधर के लिए आज्ञा नहीं है, उधर जाना तो क्या उस ओर मानों देखना भी नहीं है। हमें तो उधर देखना है, जिस ओर गुरु की आज्ञा है, इंगित है।

चातुर्मासिक क्षेत्र कौन-सा मिले, इसमें कोई आग्रह नहीं होना चाहिए। छोटे से छोटा क्षेत्र मिल जाए, बड़े से बड़ा क्षेत्र मिल जाए, अनुकूल मिल जाए, कम अनुकूल मिल जाए या प्रतिकूल मिल जाए, जो आचार्यों ने दे दिया, वही हमारे लिए चतुर्मास करने का क्षेत्र है। विहार-चतुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें--यह महत्त्वपूर्ण मर्यादा है। इससे सुन्दर व्यवस्थापन रहता है । कौन-सा सिंघाड़ा किधर विहार करे, कहां चतुर्मास करे, इससे एक संगति बनी रह सकती है, अन्यथा एक जगह पांच सिंघाड़े और एक जगह आठ सिंघाड़े हो जाएं तो व्यवस्था गड़बड़ा सकती है। इंगित और निर्देश से विहार, चतुर्मास होता है तो व्यवस्थापन सुन्दर रहने की संभावना रहती है।

तेरापंथ संगठन की तीसरी मौलिक मर्यादा है--कोई साधु-साध्वी अपना शिष्य-शिष्या न बनाए। गुरु की आज्ञा अथवा निर्देश पर साधु-साध्वियों के द्वारा दीक्षा तो दी जा सकती है और दीक्षा देने के बाद जब गुरुदर्शन का सुयोग प्राप्त हो तो जिसे दीक्षित किया है, उस साधु या साध्वी को विनम्र भाव से गुरु को सौंप दें। हमारे यहां आचार्य के अतिरिक्त गुरु या गुरुणी की प्रथा/परंपरा नहीं है। संघ में मात्र एक आचार्य या गुरु होते हैं, यह तेरापंथ संगठन की व्यवस्था है।

उत्तराधिकारी कौन बनेगा? इसमें भी व्यवस्था है। आचार्य जिसे मनोनीत कर दें, वह उत्तराधिकारी बनेगा। जिसको वर्तमान आचार्य उचित समझें, उसको स्थापित कर दें, वही भावी आचार्य के रूप में मनोनीत हो जाता है। दीक्षा देना हो तो योग्य व्यक्ति को दीक्षित करना। अयोग्यों की भीड़ संघ में न हो जाए।

योग्य व्यक्तियों का समावेश संघ में हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए। यथासंभव परीक्षण करना चाहिए कि दीक्षार्थी दीक्षा के लायक है या नहीं? सावधानी के बावजूद कभी कोई अयोग्य व्यक्ति संघ में आ जाए तो औचित्य के अनुसार उसे संघ से मुक्त भी किया जा सकता है।

कोई साधु-साध्वी किसी दूसरे साधु-साध्वी में दोष या गलती देख ले तो उसे स्वयं को बता दे, आचार्य को बता दे, किन्तु प्रचारित न करे। बताना भी उसके परिष्कार के लिए, हित के लिए होना चाहिए। द्वेषभाव से नहीं, वहां हितसाधन का दृष्टिकोण होना चाहिए। ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि गलती तो आज हुई और बताएं पांच साल बाद। यह गलत विधि है। गलती आज देखी तो पांच साल का विलंब क्यों किया जाए? परिष्कार का लक्ष्य है, तो गलती करने वाले को जल्दी बताओ कि तुममें मैंने यह गलती देखी है, इस पर ध्यान दो। अगर उसमें परिष्कार का भाव नहीं है, लापरवाहीपूर्वक वह बात पर ध्यान नहीं देता है तो आचार्यों को बता दो। आचार्य को लंबे समय के बाद बताओगे तो उसका क्या होगा? फिर परिष्कार कैसे हो सकेगा? गलती करने वाला कह भी सकता है कि मुझे तो याद ही नहीं। फिर आचार्य प्रायश्चित्त किस आधार पर देंगे? ऐसी स्थिति में तो बताने वाला स्वयं ही प्रायश्चित्त का भागी बन सकेगा। पहले अच्छा संबंध रहा, इसलिए बात को छिपाए रखा, बाद में संबंध अच्छे नहीं रहे, दूरियां बढ़ीं तो पूर्व में देखी गलतियों के उद्घाटन का प्रयास औचित्यपूर्ण कैसे कहा जा सकता है? ऐसी विधि हमारे संघ में नहीं है। अगर हित की भावना है तो किसी में दोष देखें तो उसे जल्दी से जल्दी बता देना चाहिए। दोषों को चुन-चुन कर इकट्ठा करते जाना और लंबा समय बीत जाने के बाद उनका पिटारा खोलना, ऐसा दुष्प्रयास साधु-साध्वियों या समणश्रेणी को नहीं करना चाहिए। यह भी हमारे संघ की मर्यादा और व्यवस्था है। इस तरह की अनेक मर्यादाएं हैं। मर्यादावली को पढ़ा जाए, अनुशासन संहिता को पढ़ा जाए, परंपरा की जोड़ को पढ़ा जाए तो मर्यादा और व्यवस्था के संदर्भ में अनेक जानकारियां हमें प्राप्त हो सकती हैं।

मर्यादाओं के प्रति उचित रूप में सम्मान का भाव रहना चाहिए। ऐसा नहीं कि यहां कौन देख रहा है, अतिक्रमण हो गया तो हो गया, क्या खास बात है--ऐसा चिंतन नहीं होना चाहिए। कोई देखे, न देखे हमारी आत्मा तो देख रही है, जान रही है। अंनत सिद्ध तो हमें देख रहे हैं और हम स्वयं भी तो देख रहे हैं। पाप कर्म यह नहीं देखते कि कोई दूसरा देखने वाला था या नहीं? पाप किया है तो पापकर्म का बंध अवश्य होगा। पाप लगने की ऐसी व्यवस्था है कि कोई देखे न देखे, वह अपने क्रम के अनुसार लग जाते हैं और उनका फल भी भोगना होता है। तपस्या आदि के द्वारा कर्म निर्जीर्ण न हुए तो कर्म का उदय भी होता है। हमें आत्मसाक्षी से मर्यादाओं के पालन का प्रयास करना चाहिए।

हम अपने जीवन में अर्हताओं को बढ़ाने, मर्यादाओं का पालन करने, अनुशासन में सजग रहने और अपने जीवन में विकास करने का प्रयास करें। दुर्लभ मानव जीवन हमें प्राप्त है तो जीवन में पवित्र पराक्रम करें, सत्पुरुषार्थ करें, अपने आपको और ज्यादा अर्ह बनाने का अभ्यास करें। जिससे स्वयं की उपयोगिता सिद्ध हो सके। कोई सेवा करने में सक्षम है, दक्ष है, यह उसकी उपयोगिता है। किसी में विद्वत्ता है, किसी में संस्कृत भाषा के अध्यापन की योग्यता है तो उसे अपनी योग्यता का लाभ दूसरों को भी देना चाहिए। अध्यापन में उपयोगिता हो सकती है, लेखन में भी हो सकती है। किसी साध्वी की हस्तलिपि अच्छी है और पात्रों पर नाम आदि दक्षता से अंकित कर सकती है तो यह उसकी उपयोगिता हो गई। हमारे जीवन में उपयोगिता बढ़े, ऐसा हमें प्रयास करना चाहिए।

हमें अपने जीवन की उपयोगिता को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। मर्यादाओं का पालन करना, अनुशासन में रहना और उसके साथ विकास की दिशा में हमें आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। साधु-साध्वियां और समणियां, जिनकी अवस्था अभी छोटी है, उनके सामने संभावित लंबा भविष्य है और छोटी अवस्था का यह समय विकास करने का अच्छा समय है। उसका उपयोग करना चाहिए। अभी बारह, तेरह, चौदह, अठारह, बीस या पचीस वर्ष के हैं तो यह अच्छा समय है ध्यान, स्वाध्याय, सेवा आदि के

विकास का। नई-नई चीजें सीखनी चाहिए, अध्ययन और विद्यार्जन करना चाहिए। हमारे छोटे साधु-साध्वियों और समणियों को विशेष ध्यान देना चाहिए कि उनके सामने अभी अवकाश है, समय है तो उसका समुचित उपयोग करते हुए उन्हें अपना खूब विकास करना चाहिए। उन्हें ही क्यों, सभी को अपने-अपने ढंग से अपना विकास करने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए।

हम मर्यादाओं का पालन करें, मर्यादाओं के घेरे में रहने का यथोचित रूप में अभ्यास करें और अपनी उपयोगिता बढ़ाने एवं विकास करने का प्रयास करें, यह वांछनीय है।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण कच्छ (गुजरात) में

धन मद का कारण न बने

६ अप्रेल। प्रातः विहार से पूर्व आचार्यवर ने माधापर के नवावास स्थित श्रद्धालु घरों का स्पर्श किया। लगभग ८.०५ किमी. का विहार कर आचार्यवर कुकमा पधारे। वहां संत श्री गरीबदास निवृत्ति आश्रम में प्रवास हुआ। आश्रम के हॉल में आयोजित कार्यक्रम में आश्रम के महंत गुरु संत वासुदेव महाराज ने आश्रम पदार्पण पर आचार्यवर का स्वागत किया। स्थानीय सरपंच श्रीमती दिवालीबेन, आश्रम के ट्रस्टी श्री बेलजीभाई भूड़िया, श्रीमती निर्मलाबेन दोशी एवं पिनाबेन दोशी ने स्वागत में अपने विचार रखे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में अहंकार भी जीवित है। आदमी के मन में अधिकार पाने की भावना आ जाती है। दूसरे लोग मेरी अधीनता में रहें, मेरी आज्ञा मानें, मुझे सम्मान व ख्याति मिले--यह भावना अहंकार से संबद्ध है। अहंकार के अभाव में अधिकार जमाने की इच्छा क्यों उत्पन्न होगी? शराब पीने से आदमी उन्मत्त हो जाता है, उस रूप में उन्मत्त भले न हो, पर कुछ अंशों में अहंकारी वैसा हो सकता है। साधु को तो अहंकार से दूर रहने का प्रयास करना चाहिए। साधु का लक्ष्य होता है कषाय विजेता बनने का। साधु का धन है साधना। उसमें निरहंकारता की साधना पुष्ट बने। गृहस्थ में भी अहंकार की मंदता आए। धन, सत्ता आदि पुण्योदय से प्राप्त हो सकते हैं, पर वे मद का कारण न बने, यह वांछनीय है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आज हम कुकमा आए हैं। अनायास ही वासुदेव महाराज से मिलना हो गया। संत संत के पाहुने बने हैं। पता चला कि यहां संत संन्यासी आते रहते हैं। स्थान अच्छा प्रतीत हुआ। साधु को जो उपलब्ध हो जाए, उसमें समता रहे।' आज चैत्र कृष्णा चतुर्दशी होने से आचार्यवर ने हाजरी का वाचन किया। साधु दीक्षाक्रम से पंक्तिबद्ध व साध्वियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का समुच्चारण किया। हाजरी से पूर्व साध्वी चारित्रयशाजी व साध्वी वर्धमानयशाजी ने गीत का संगान किया।

समस्याओं का समाधायक इच्छापरिमाण व्रत

१० अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः लगभग १५.०७ किमी. का विहार कर रतनाल पधारे। अहिंसा यात्रा के साथ पूज्यप्रवर के पावन पदार्पण से संपूर्ण गांव में हर्ष और उल्लास का वातावरण था। स्थानीय विधायक एवं पूर्व मंत्री श्री वासणभाई के नेतृत्व में ग्रामवासियों ने आचार्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया। रतनाल में आचार्यवर का प्रवास श्री राधाकृष्ण नगर प्राथमिकशाला में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में विधायक श्री वासणभाई एवं रतनाल के सरपंच श्री रणछोड़भाई ने पूज्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। सात दिन पूर्व भुज में आचार्यवर द्वारा समणश्रेणी में दीक्षित समणी ख्यातिप्रज्ञाजी

ने अपने सप्तदिवसीय अनुभवों को प्रस्तुति दी। पूज्यवर ने आर्षवाणी के उच्चारण के साथ नवदीक्षित समणी को विस्तारपूर्वक समणश्रेणी की आचारसंहिता का प्रत्याख्यान करवाया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जिस प्रकार आकाश असीम होता है, उसी प्रकार यदि इच्छाएं अपना विस्तार लेती जाएं तो उनकी भी कोई सीमा नहीं रहती। जैन वाङ्मय में वर्णित श्रावक के बारह व्रतों में पांचवां व्रत है--इच्छापरिमाण व्रत। गृहस्थ के लिए अनिच्छ बनना कठिन होता है, किन्तु उसे महेच्छ भी नहीं बनना चाहिए। जब इच्छाएं विस्तार ले लेती हैं और उनकी पूर्ति के साधन अच्छे नहीं होते हैं तो व्यक्ति सदाचार से दूर हो जाता है। अर्थार्जन के साथ नैतिकता रहती है तो व्यक्ति आर्थिक शुचिता की दिशा में आगे बढ़ सकता है। यदि बढ़ते हुए असंतोष पर नियंत्रण नहीं किया जाता है तो जीवन में पवित्रता रहनी कठिन हो जाती है। परम सुख को प्राप्त करने के लिए संतोष को धारण करना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'यदि इच्छा परिमाण व्रत व्यापक हो जाए तो दुनिया की अनेकानेक समस्याएं स्वतः समाहित हो सकती हैं। व्यक्ति यह सोचे कि जितने पदार्थों से मेरा काम अच्छी तरह चल सकता है, जीवन की अपेक्षाओं की पूर्ति हो जाती है, उससे अधिक मैं क्यों रखूं? पैसे को भौतिक दुनिया का ईश्वर भी कहा जा सकता है। कितने-कितने कार्य पैसे के द्वारा हो जाते हैं। व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि जीवन में पैसा कुछ तो है, किन्तु सब कुछ नहीं है। मनुष्य को केवल धन को ही नहीं देखना चाहिए, अपितु उसे धर्म पर भी ध्यान देना चाहिए। यदि इच्छाओं का परिसीमन किया जाता है तो यह जीवन भी अच्छा बन सकता है और आगे भी सद्गति मिलने की संभावना बन जाती है।'

विक्रम संवत् २०७० का शुभारंभ

११ अप्रेल, चैत्र शुक्ला प्रतिपदा एवं विक्रम संवत् २०७० का शुभारंभ। नववर्ष के अवसर पर आज बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने परमपूज्य आचार्यप्रवर के श्रीमुख से मंगलपाठ का श्रवण किया। आचार्यप्रवर रतनाल से अंजार की ओर प्रस्थित हुए। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज का प्रवास सापेड़ा में होना था, किन्तु अपेक्षानुसार इसमें परिवर्तन किया गया। पूज्यवर इस मार्गवर्ती गांव के भीतर पधारे और वहां नवीन बरारिया के घर को अपनी चरणरज से पावन किया। गत अनेक वर्षों से प्रतिवर्ष आचार्यप्रवर के दर्शन करने वाला यह युवक अपने आंगन में अपने आराध्य को पाकर आह्लादित था।

पूज्य आचार्यवर १२.०६ किमी. का विहार कर अंजार पधारे। आचार्यवर के अंजार पदार्पण से न केवल स्थानीय तेरापंथ समाज, अपितु जैन एवं जैनेतर समाज में भी उत्साहपूर्ण वातावरण था। स्थानीय नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमती कल्पनाबेन शाह के नेतृत्व में सैकड़ों लोगों ने पूज्यचरण की अगवानी की। स्थानकवासी छहकोटि, आठकोटि, नानीपक्ष, बागड़ बे चौबीसी, बीसा ओसवाल, जैन गुर्जर जाति, आठकोटि मोटीपक्ष, खरतरगच्छ, मुनि सुव्रत स्वामी सेवामंडल, जैन जागृति सेन्टर, अचलगच्छ, तपागच्छ आदि विभिन्न समाज के लोगों ने आचार्यवर का श्रद्धायुक्त स्वागत किया।

स्वागत जुलूस के मध्य पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर स्थानीय नगरपालिका द्वारा निर्मित **'अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी मार्ग'** का लोकार्पण किया गया। अंजार में पूज्य आचार्यप्रवर का प्रवास श्री रविभाई संघवी के निवास पर रहा। अपने आंगन में अपने आराध्य का एकदिवसीय प्रवास प्राप्त कर संपूर्ण परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में स्थानीय महिलाओं एवं कन्याओं ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री रविभाई संघवी की ओर से श्री जीत संघवी, प्रवास व्यवस्था समिति कच्छ के अंतर्गत अंजार प्रभारी श्री अशोकभाई मेहता, श्री चन्द्रकान्तभाई संघवी, तेरापंथ महिला मंडल की ओर

से श्रीमती हिनाबेन कुबाड़िया ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। समणी रुचिप्रज्ञाजी ने गीत का संगान किया। भुज प्रवास के दौरान आचार्यप्रवर से अनशन ग्रहण करने वाले श्री महादेवभाई के संथारे की सानंद परिसंपन्नता के पश्चात आज उनके पारिवारिकजन श्रीचरणों में उपस्थित हुए। उनकी संसारपक्षीया सुपौत्री समणी क्षान्तिप्रज्ञाजी ने श्री महादेवभाई के संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमती कल्पनाबेन शाह, तपागच्छ जैन संघ तथा बागड़ सात चौबीसी की ओर से श्री बनेचन्दभाई, स्थानकवासी आठकोटि नानीपक्ष के अध्यक्ष श्री रमेशभाई शाह, इंडियन रेडक्रास सोसायटी के अध्यक्ष डा. सी. एन. मेहता, बागड़ बे चौबीसी कच्छ जैन संघ के अध्यक्ष श्री भोगीभाई मेहता, जैन जागृति सेंटर की ओर से श्री नेमीचन्द शाह ने आचार्यवर के स्वागत में अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति के जीवन में विपत्ति भी आ सकती है और संपत्ति भी प्राप्त हो सकती है। जो बड़ों की अवमानना करता है, उनकी हितकर शिक्षाओं को नहीं मानता, वह अविनीत अपने लिए विपत्ति खड़ी कर लेता है। इसके विपरीत सुविनीत व्यक्ति संपदा को प्राप्त करता है। विद्या अविनय से विभूषित नहीं होती, वह विनय से शोभायमान होती है। जीवन में भावात्मक संतुलन रहना चाहिए। भावात्मक शुद्धि रहे तो आत्मा निर्मल रह सकती है।'

नववर्ष के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'विक्रम संवत् का आज नया वर्ष शुरू हुआ है। वि.सं.२०६९ व्यतीत हो गया और वि.सं. २०७० आज से प्रारंभ हो रहा है। नववर्ष के प्रारंभ में मंगलकामनाएं भी की जाती हैं। नये वर्ष के प्रति जिनके मन में विशेष उल्लास का भाव रहता है, उन्हें विशेष रूप से आत्मचिंतन करना चाहिए कि जीवनकाल का एक वर्ष बीत गया, कम हो गया। मैंने इस वर्ष में क्या किया? समय बीतता जा रहा है। वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता और उसे रोका भी नहीं जा सकता। उसे सिर्फ पकड़ा जा सकता है, अर्थात् उसका सदुपयोग किया जा सकता है। समय एक संपदा है। उसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए, बल्कि उसको अच्छे कार्य में नियोजित करना चाहिए। समय का सदुपयोग करने के लिए व्यक्ति को योजना बनानी चाहिए। योजना भावुकता में न बनाई जाए। वह संतुलित और शक्य होनी चाहिए। वि.सं.२०७० का यह वर्ष मंगलमय बीते, शुभाशंसा।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने अंजार से संबद्ध वयोवृद्धा साध्वी मूलांजी एवं साध्वी मंगलयशाजी को याद करते हुए उन्हें परोक्ष रूप में खूब अच्छी साधना और सेवा करने की प्रेरणा प्रदान की। स्थानीय तेरापंथी परिवारों को मध्याह्न में आचार्यप्रवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। श्रद्धालुओं ने पारिवारिक सेवा के दौरान विविध संकल्प स्वीकार किए।

भक्तों के लिए तेईस किमी. का विहार

१२ अप्रेल। श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने भक्तों पर अनुग्रहवृष्टि करते हुए आज लगभग तेईस किमी. का विहार किया। यों तो अंजार से गांधीधाम स्थित अष्टमंगल की दूरी लगभग साढ़े दस किमी. है, किन्तु आचार्यवर ने श्रद्धालुओं की प्रार्थना पर लगभग तेरह किमी. का अतिरिक्त विहार किया। पूज्यवर ने प्रातः अंजार से प्रस्थान किया। लगभग दो किमी. का अतिरिक्त विहार कर आचार्यवर ने अंजार के श्रद्धालुओं के घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। अन्य अनेक घरों में भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। तत्पश्चात गांधीधाम के उपनगर आदिपुर केसरनगर, मैत्री सोसायटी, संतोषीमाता मंदिर रोड, टी.आर.एस.सोसायटी मेघपर, बोरिचीरोड, हॉली डे रिसोर्ट, शर्मा रिसोर्ट, नाकोड़ा नगर आदि में स्थित अनेक श्रद्धालुओं के घरों में चरणस्पर्श कर परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी के उन शब्दों का प्रत्यक्ष रूप दिखा दिया कि 'महाश्रमण करुणा में मुझसे आगे निकल रहे हैं।' पूज्यवर चिलचिलाती धूप की परवाह किए बिना लगभग पांच घंटों तक श्रद्धालु जनता पर अनुग्रह की शीतल वृष्टि करते रहे। आचार्यवर की इस कृपावृष्टि से अभिस्नात

भक्त अपने सौभाग्य की सराहना करते नहीं थक रहे थे तो अन्य लोग महातपस्वी आचार्यवर द्वारा अपने भक्तों के लिए किए जाने वाले अतिशय श्रम को देखकर मानों दांतों तले अंगुली दबा रहे थे। पूज्यवर लगभग बारह बजे निर्धारित प्रवास स्थल गांधीधाम स्थित अष्टमंगल में नवनिर्मित 'भिक्षु साधना केन्द्र' में पधारे। आचार्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर स्थानीय तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री बाबूलाल सिंघवी ने नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया। प्रवास स्थल पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने आचार्यवर को वंदन करते हुए विहार की सुखपृच्छा की, तत्पश्चात पूज्यवर कुछ ही समय में अत्यल्प प्रातराश कर कार्यक्रम स्थल पर पधार गए। ऐसा लग रहा था जैसे महाश्रम के पर्याय आचार्यश्री महाश्रमण के लिए कार्यान्तर ही विश्राम है।

पापों से बचाता है अनुकंपा भाव

कार्यक्रम में प्रवास व्यवस्था समिति कच्छ के संयोजक तथा स्थानीय तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री बाबूलाल सिंघवी, श्रीमती ज्ञानलता संकलेचा, कल्पना मेहता, बालिका खुशी बाफणा एवं सुश्री श्रद्धा बाफणा ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी अर्चनाश्रीजी के संसारपक्षीय पिता श्री नानालालभाई मेहता ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में अर्हत्, सिद्ध, साधु और केवली प्रज्ञप्त धर्म--इन चारों को मंगल कहा गया है। एक मंगल का भी महत्त्व होता है, जहां अनेक मंगल साथ हों तो और भी विशिष्ट बात हो जाती है। इन चारों मंगलों को निष्कर्ष रूप में एक वाक्य में कहा जाए तो कहा जा सकता है--धर्म मंगल है। अर्हत, सिद्ध, साधु धर्म से जुड़े हुए होते हैं, इसलिए वे मंगल हैं। हम कहीं भी जाएं, कहीं भी रहें, धर्म हमारे साथ रहना चाहिए। यदि धर्म हमारे साथ है तो मानना चाहिए कि मंगल हमारे साथ है। हमारी चेतना धर्म से ओतप्रोत रहनी चाहिए। दूध में चीनी की भांति धर्म हमारी आत्मा में घुलमिल जाए।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'धर्म की दृष्टि से व्यक्ति के भीतर अनुकंपा की चेतना जागृत रहनी चाहिए। जिसके भीतर दया है, वह पापों से काफी बच सकता है। किसी को हमारी ओर से कष्ट न हो, ऐसा प्रयास वांछनीय है। धर्म जीवन में रहे, इसके लिए यथासंभव त्याग और संयम का अभ्यास करना चाहिए। गृहस्थ जीवन में भी यदि लक्ष्य बन जाए तो त्याग की दिशा में काफी आगे बढ़ा जा सकता है। भौतिक सुख-सुविधा की प्राप्ति छोटी बात है, बड़ी बात है अध्यात्म की साधना। पैसा तो अधिकतम इस जन्म तक ही साथ रह सकता है, किन्तु धर्म आगे भी अपना प्रभाव छोड़ने वाला होता है।'

भिक्षु साधना केन्द्र नामक भवन के लोकार्पण के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'भारत में कितने-कितने संत महर्षि हुए हैं। महामना आचार्य भिक्षु कोई तपःपूत पुरुष थे, मानों कोई भावितात्मा अणगार जैसे संत थे। उनके जीवन में बड़ा मंगल था। उनकी अनुशासनशैली विशिष्ट थी। अनुशासन के विषय में वे अपने प्रिय शिष्य भारमलजी को भी नहीं छोड़ते थे। स्वामीजी के बताए पंथ में हम साधना कर रहे हैं। उनके नाम से जुड़े हुए इस भवन का आज लोकार्पण हुआ है और हमें रहने के लिए मिला है। भवन में यथासंभव धार्मिक गतिविधियां संचालित होती रहें।'

गांधीधाम में भव्य स्वागत

१३ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः लगभग साढ़े छह किमी. का चक्कर लेकर अष्टमंगल ६ बीडी सुभाषनगर, १०ए, ७डी में स्थित श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श किया। अन्य अनेक घर भी पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने। तदुपरान्त आचार्यप्रवर अमरचन्द सिंघवी इंटरनेशनल स्कूल के प्रांगण में पधारे। विद्यालय से संबद्ध पदाधिकारियों ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। यहां आयोजित कार्यक्रम में

आचार्यवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी एवं साध्वीप्रमुखाजी ने विद्यार्थियों को उद्‌बोधित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा--'विद्यार्थियों में ज्ञान का विकास तो होना ही चाहिए, बौद्धिक विकास के साथ उनमें चारित्रिक एवं भावात्मक विकास भी होना चाहिए। इस विद्यालय से जुड़े कार्यकर्ता विद्यार्थियों के आध्यात्मिक विकास में अपना योगदान देते रहें।'

पूज्यप्रवर ने विद्यालय से भव्य जुलूस के साथ गांधीधाम के मुख्य प्रवास स्थल सेक्टर-२ की ओर प्रस्थान किया। वर्षों पश्चात तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य का गांधीधाम में पावन पदार्पण तेरापंथ समाज के लिए तो अतिशय हर्षोल्लास का विषय था ही, अन्य जैन और जैनेतर समाज भी आचार्यवर का स्वागत कर आह्लाद का अनुभव कर रहा था। तेरापंथ समाज के साथ अचलगच्छ, तपागच्छ, खतरगच्छ, दिगम्बर, बागड़ बे चौबीसी, जैन सोश्यल ग्रुप, पार्श्वनाथ महिला मंडल, जैन जागृति सेंटर आदि विभिन्न समुदायों और संस्थाओं के हजारों लोगों की उत्साहपूर्ण सहभागिता स्वागत जुलूस को भव्य रूप प्रदान कर रही थी।

परमपूज्य आचार्यप्रवर के पदचिह्नों का अनुगमन करता हुआ पंक्तिबद्ध संत समुदाय और पूज्यवर के आगे-आगे पंक्तिबद्ध गतिमान साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वीवृन्द मनोहारी दृश्य उपस्थित कर रहे थे। चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण था। ज्ञानशाला द्वारा प्रस्तुत नशामुक्ति, साम्प्रदायिक एकता मंच, नैतिकता की देवी, अनेकता में एकता, दीक्षा समारोह आदि झांकियां जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही थीं। भव्य स्वागत जुलूस स्वामीनारायण गुरुकुल, टैगोर रोड इफको कालोनी, सपना नगर रोड होते हुए सेक्टर-२ स्थित पंचवटी नामक सिंघवी परिवार के आवास परिसर के सामने निर्मित अहिंसा समवसरण में पहुंचकर विशाल सभा के रूप में परिणत हो गया। आज का कुल विहार लगभग दस किमी. का रहा। पूज्यवर का त्रिदिवसीय प्रवास पंचवटी में श्री अशोक अमरचन्द सिंघवी के आवास पर हुआ। आचार्यवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर स्वर्गीय अमरचन्दजी सिंघवी का यह परिवार अत्यन्त आह्लाद का अनुभव कर रहा था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल ने पृथक्‌-पृथक्‌ गीत का संगान किया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री राकेश भंसाली, स्थानीय तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष श्री हनुमान भंसाली, प्रवास व्यवस्था समिति, कच्छ के संयोजक श्री बाबूलाल सिंघवी, सहसंयोजक श्री पारसमल खांटेड़, महामंत्री श्री शांतिलाल बागरेचा, सहमंत्री श्री अनंत सेठिया ने अपने आराध्य के स्वागत में श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

स्थानीय मूर्तिपूजक समाज के अध्यक्ष श्री चंपालाल पारख, छहकोटि स्थानकवासी समाज की ओर से श्री अनूपचन्दभाई मोरबिया, दिगंबर समाज की ओर से श्री राजकुमार सरावगी, आर्य समाज की ओर से श्री वचोनिधि आर्य, गांधीधाम चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इण्डस्ट्रीज की ओर से श्री दिनेश गुप्ता ने आचार्यवर के श्री चरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

स्थानीय विधायक श्री रमेशभाई माहेश्वरी तथा सांसद श्री पूनमबेन जाट ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। कच्छ जिला भाजपा प्रमुख श्री पंकजभाई मेहता ने प्रेक्षाध्यान से अपने जीवन में आए बदलाव की चर्चा की। गांधीधाम से संबद्ध साध्वी गौरवप्रभाजी, साध्वी अर्हतप्रभाजी, साध्वी लब्धियशाजी एवं मुनि हेमन्तकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीवृन्द ने गीत का संगान किया। साध्वी मंगलयशाजी द्वारा प्रेषित भावनाओं का वाचन श्री नरेन्द्रभाई संघवी ने किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आर्षवाणी में एक सचाई की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है कि जीवन अध्रुव है। आत्मा और शरीर के योग का नाम जीवन है। जहां केवल आत्मा अथवा केवल शरीर है, वहां जीवन नहीं होता। शरीर को अस्थायी और आत्मा को स्थायी कहा गया है। व्यक्ति को सोचना चाहिए कि मैं शरीर के लिए कितनी-कितनी क्रियाएं करता हूं, किन्तु आत्मा

के लिए भी कुछ कर रहा हूं या नहीं? हमें दुर्लभ मनुष्य जीवन प्राप्त है, इसलिए और ज्यादा जागरूक बनकर आत्मा के कल्याण का प्रयास करना चाहिए।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'विकास के चार आयाम हैं--भौतिक, आर्थिक, नैतिक और आध्यात्मिक। गृहस्थ भौतिक विकास के लिए प्रयास करता है। यह कोई बुरी बात भी नहीं होती। गांव, नगर, राज्य अथवा राष्ट्र का भौतिक विकास नहीं होता तो एक कमी रह जाती है। भौतिक विकास के लिए आर्थिक विकास अपेक्षित होता है। ये दो विकास हो जाते हैं तो भी मानना चाहिए कि अधूरा विकास हुआ है। नैतिक और आध्यात्मिक--ये दो विकास भी साथ में जुड़ जाते हैं तो विकास की परिपूर्णता हो सकती है। यदि जीवन में अनुकंपा का भाव पुष्ट बन जाता है तो नैतिक और आध्यात्मिक विकास स्वतः हो सकते हैं। जीवन व्यवहार में अहिंसा और बाजार में नैतिकता रहनी चाहिए। व्यक्ति के मस्तिष्क में नैतिकता रहे तो वह हर समय उसके साथ रह सकती है। सरकार हो या जनता, नैतिकता हर क्षेत्र में रहे, यह वांछनीय है।'

पूज्यवर ने राजनीति के संदर्भ में कहा--'राजनीति से संबद्ध अनेक व्यक्ति यहां उपस्थित हैं। मेरा मानना है कि राजनीति कोई अस्पृश्य चीज नहीं है। शासन की नीति को राजनीति कहा जाता है। वह देश, समाज आदि की सुव्यवस्था के लिए आवश्यक होती है। राजनीति खराब नहीं होती। किन्तु आजकल व्यवहार की भाषा में उसकी गरिमा का अपकर्ष कर दिया गया है। राजनीति तो सेवा का माध्यम है। वह मूल्याधारित रहे, यह अपेक्षित है। राजनेताओं में सेवा की भावना के साथ नैतिकता के प्रति निष्ठा रहती है तो राजनीति में पवित्रता रह सकती है।'

गांधीधाम समागमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज मैं गांधीधाम आया हूं। मुझे आत्मतोष है कि मैं परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी की वाणी को कृतार्थ करने में सफल हो सका और कच्छ के विशिष्ट नगर गांधीधाम में आ गया। गांधीधाम की जनता में अहिंसा व संयम की चेतना बनी रहे। यहां के लोग आत्मशान्ति और चित्तसमाधि में रहें।' पूज्यवर ने इस प्रसंग में साध्वीप्रमुखाजी, मंत्री मुनिश्री और मुख्यनियोजिका के विषय में जनता को श्लाघापूर्ण अवगति दी। आचार्यवर ने गांधीधाम से किसी रूप में संबद्ध मुनि हेमन्तकुमारजी, साध्वी अर्हतप्रभाजी, साध्वी गौरवप्रभाजी, साध्वी लब्धियशाजी, साध्वी मूलांजी, साध्वी मंगलयशाजी का नामोल्लेख करते हुए उन्हें अच्छी साधना, अच्छा विकास और अच्छी सेवा करने की प्रेरणा प्रदान की। असाढ़ा निवासी गांधीधाम प्रवासी स्वर्गीय चंपालाल भंसाली (सेठिया) के जीवनवृत्त को उनके परिजनों ने आचार्यवर को भेंट किया।

मध्याह्न में स्वामीनारायण सम्प्रदाय के श्री सौरभ स्वामीजी और सुयोग स्वामीजी आचार्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यवर ने उनसे संक्षिप्त वार्तालाप किया।

अमीरी की रेखा नहीं हो सकती क्या?

१४ अप्रेल। पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में कारपोरेट सोश्यल रेस्पांसिबिलिटी (सी.एस.आर.) थीम पर सापेक्ष अर्थशास्त्र का गुजरातस्तरीय दोदिवसीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर) ने 'शान्ति का सन्देश' गीत का संगान किया। कच्छ प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री बाबूलाल सिंघवी ने स्वागत भाषण किया। वीर नर्मद दक्षिण गुजरात यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति डा. बी. ए. प्रजापति, पूर्व कुलपति डा. अश्विन कापड़िया, चार सौ से अधिक पुस्तकों के लेखक एवं विचारक श्री जी. नारायण, गुजरात इकोनोमिक प्रोफेसर एसोसियेशन के अध्यक्ष प्रो.रोहित शुक्ला, जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी ने विषय के संदर्भ में अपने मौलिक विचारों को प्रस्तुति दी। मुनि अक्षयप्रकाशजी ने भी इस संदर्भ में अपने विचार रखे।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जीवन में संयम का अवतरण होने से अहिंसा आदि यम नियम की उपासना हो सकती है। हमारी जीवनशैली ऐसी बने कि धर्म हमारे जीवन व्यवहार में आए।

यह तभी संभव हो सकता है, जब व्यक्ति में ज्ञान चेतना व त्याग चेतना जागृत हो।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'अर्थ के संदर्भ में अनेक अवधारणाएं चलती हैं। कौटिल्य ने अर्थ को दुनिया में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना है। कई विचारकों का मंतव्य है कि अर्थ अनर्थ है। भगवान महावीर, गांधी, मार्क्स व कीन्स--इन चार व्यक्तित्वों ने अर्थ के बारे में अपने मौलिक विचार दिए हैं। महावीर अहिंसक क्रान्ति के पुरोधा थे। गांधी अहिंसा के पक्षधर थे। सामाजिक, आर्थिक क्रान्ति के पुरोधा थे कार्ल मार्क्स। आज आर्थिक भ्रष्टाचारों की संस्कृति पनप रही है। इस पर नियंत्रण तभी संभव है, जब भगवान महावीर द्वारा प्रस्तुत जीवनशैली को अपनी जीवनशैली बनाया जाए।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मनुष्य में कामना होती है। वह बढ़ भी सकती है और उस पर अंकुश भी लगाया जा सकता है। कामना को वृद्धिंगत किया जाए तो वह आकाश की भांति असीम हो सकती है। आचार्य महाप्रज्ञ ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की बात प्रस्तुत की। अर्थ ऐसा तत्त्व है, जिसे मैं उपयोगी मानता हूं। अर्थ को अनर्थ कहना एक चिंतन है और यह समीचीन भी है। इसका दूसरा पक्ष है--अर्थ सार्थक भी होता है। अर्थ मात्र अनर्थ ही हो, तब तो इसका सबको परित्याग कर देना चाहिए। किन्तु यह कठिन है। सामान्य व्यक्ति के लिए ऐसा कर पाना जरूरी भी नहीं है। अपरिग्रह का सिद्धान्त हम जैसे साधुओं के लिए है। गृहस्थ के लिए अपरिग्रह की बात इतनी उपयोगी नहीं होती। जैन सिद्धान्त में गृहस्थ के लिए अपरिग्रह की जगह 'इच्छा परिमाण' शब्द आया है।'

सापेक्ष अर्थशास्त्र के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'अर्थार्जन में प्रामाणिकता रहे। आचार्य महाप्रज्ञ अर्थशास्त्र के संदर्भ में अर्थ व अर्थाभास--इन दो शब्दों का प्रयोग करते थे। न्याय से उपार्जित अर्थ व अन्यायोपार्जित धन अर्थाभास होता है। जीवन की अधिकांश आवश्यकताएं अर्थाधारित हैं। दुनिया का काम पैसे से चलता है। अणुव्रत जीवन में उतर जाए तो सापेक्ष अर्थशास्त्र की बात फलित हो सकती है। सापेक्ष अर्थशास्त्र के संदर्भ में दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है--उपभोग में संयम। पदार्थ के उपभोग में संयम रखा जा सकता है। विद्युत् आदि के उपभोग में संयम की चेतना जागृत रहे। व्यक्ति अति विलासिता से बचे। आचार्य तुलसी द्वारा प्रस्तुत विसर्जन का सूत्र इच्छा परिमाण की भावना को पुष्ट करता है। सापेक्ष अर्थशास्त्र की दृष्टि से तीसरा महत्त्वपूर्ण सूत्र है--अनुकंपा भाव। व्यक्ति गलत कार्य से बचने का प्रयास करे। कोई किसी का शोषण न करे। इससे दुनिया की व्यवस्था ठीक चल सकती है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'हम बहुत बार 'गरीबी-रेखा' के बारे में सुनते हैं। वैसे ही अमीरी की रेखा भी है क्या? इसकी रेखा हो जाए तो व्यक्ति उस निश्चित सीमा से ऊपर का परित्याग कर सकता है। सापेक्ष अर्थशास्त्र पर आयोजित दो दिनों के इस सम्मेलन में समीचीन चिंतन हो। नैतिकता व संयम की बात दुनिया में आ सके तो अच्छा हो सकता है।' कार्यक्रम का संचालन प्रबुद्ध श्रावकोत्तम श्री बजरंग जैन ने किया।

छह तकनीकी सत्रों व पैनल डिस्कशन में कई विषयों पर चिंतन हुआ, साथ ही अनेक प्रोफेसर, मुनियों व समणीजी ने विभिन्न विषयों पर अपने पेपर्स प्रस्तुत किए। सम्मेलन में २८० प्रोफेसर, लेक्चरर व अन्य विशिष्टजनों ने रजिस्ट्रेशन करवाया। सम्मेलन में भाग लेने वालों में प्रमुख थे अर्थशास्त्र के प्रोफेसर ए. ए.शेख, बडोदरा की एम.एस.यूनिवर्सिटी के डीन प्रोफेसर वी.एस.पटेल, एच.के.आर्ट्स कालेज अहमदाबाद के प्रोफेसर हेमन्त शाह, चेन्नई से समागत श्री चतुर्वेदी स्वामी, जयनारायण व्यास यूनिवर्सिटी जोधपुर के डीन प्रो.वाढेल, हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. एच.वी.राव, कच्छ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो.एच.वी.हाथी, सोमनाथ संस्कृत यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो.वी.के.शास्त्री, गणपति यूनिवर्सिटी के कुलपति एल.एन.पटेल। एक सत्र मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी के उपपात में हुआ। उद्घाटन सत्र के अलावा सभी सत्र इफको ऑडिटोरियम में आयोजित हुए।

वाववासियों के निवेदन पर अत्यन्त अनुग्रह करके आचार्यवर ने पूर्व घोषित त्रिदिवसीय प्रवास के

स्थान पर पंचदिवसीय प्रवास प्रदान करने की घोषणा की। अब आचार्यवर का यह प्रवास १०-१४ मई तक रहेगा। १३ मई को अक्षय तृतीया समारोह आयोज्य है। शासनसेवी श्री चंपकभाई मेहता ने आचार्यवर की इस कृपा के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की। आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'मारवाड़ यात्रा के दौरान हमारा चिंतन बना कि मुनि अक्षयप्रकाशजी को गुजरात यात्रा में बुला लेना चाहिए। हमने शासनगौरव मुनि धनंजयकुमारजी को सन्देश दिया और इन्हें बुला लिया। मुनि अभिजितकुमारजी एवं मुनि जागृतकुमारजी भी वाव के हैं और साथ में हैं।'

आज आचार्यवर के मुख व मस्तक का लुंचन हुआ। साधु-साध्वियों ने लुंचन की वंदना करते हुए इस निर्जरा में सहभागी बनने का अनुरोध किया। आचार्यवर ने साधु-साध्वियों को एक घंटा आगम स्वाध्याय व श्रावक-श्राविकाओं को अतिरिक्त सात सामायिक करने का कृपापूर्ण निर्देश प्रदान किया।

दम्पति शिविर का आयोजन

परमपूज्य आचार्यवर की सन्निधि में एकदिवसीय दम्पति शिविर आयोजित हुआ, जिसमें पा.शि.संस्था के मंत्री श्री बजरंग जैन, अ.भा.तेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़, उपाध्यक्ष श्री बी.सी.जैन ने विषयबद्ध प्रशिक्षण दिया। तेयुप अध्यक्ष श्री राकेश सेठिया ने स्वागत भाषण किया। महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती ज्ञानलता संकलेचा ने भी अपने विचार रखे।

शिविर के समापन सत्र में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने हेतु परिवार में सहिष्णुता, सौहार्द व प्रेमभावना को वृद्धिंगत करने, स्वार्थ को त्यागने, बड़ों को उदार बनाने की अपेक्षा होती है। क्रोध व आवेग पर नियंत्रण करने से दाम्पत्य जीवन काफी तनावमुक्त व सुखमय रह सकता है।'

प्रातः प्रवचन से पूर्व दीथार्थिनी मुमुक्षु नीता संघवी की शोभायात्रा निकली। विभिन्न मार्गों से होती हुई यह शोभायात्रा अमर पंचवटी स्थित अहिंसा समवसरण में पहुंची। रात्रि में मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। समारोह में अच्छी उपस्थिति थी।

अमृतवाणी द्वारा संस्कार चैनल और पारस चैनल पर प्रवचन प्रसारण

अमृतवाणी लंबे समय से पूज्यवरों के प्रवचनों तथा विशिष्ट संघीय कार्यक्रमों को वीडियो के माध्यम से सुरक्षित रखने का प्रयास कर रही है। अमृतवाणी के निदेशक श्री जेसराज सेखानी ने जानकारी देते हुए बताया कि १ जनवरी २०१३ से पारस चैनल पर प्रतिदिन प्रातः ७.३५ बजे से और १ अप्रेल २०१३ से संस्कार चैनल पर प्रतिदिन प्रातः ८.१० बजे पूज्यवर के दैनिक प्रवचनों का प्रसारण अमृतवाणी द्वारा किया जा रहा है। आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह के संदर्भ में प्रत्येक रविवार को संस्कार चैनल पर गुरुदेव तुलसी के विशेष प्रवचनों की श्रृंखला का प्रसारण भी किया जा रहा है। उल्लेखनीय है--इससे पूर्व सन २००१ से मित्र परिषद कोलकाता द्वारा संस्कार चैनल पर आचार्यवर के प्रवचनों का प्रतिदिन प्रसारण किया गया। चाड़वास विकास मंच, कोलकाता भी इस कार्य में सहयोगी रहा। लगभग बारह वर्षों तक 'प्रेरणा-पाथेय' नाम से किया गया यह सत्प्रयास धर्मसंघ की प्रभावना का महत्त्वपूर्ण उपक्रम रहा। तेरापंथ समाज सहित अन्य जैन एवं जैनेतर समाज के लाखों लोग इस माध्यम से पूज्यवर के प्रवचनों से न केवल लाभान्वित हुए, अपितु उनके दिल में परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी और परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण के प्रति उनकी श्रद्धा भी प्रगाढ़ बनी। 'अमृतम मीडिया' द्वारा गत वर्ष पारस चैनल पर यही उपक्रम प्रारंभ किया गया। प्रसारण सहयोगियों द्वारा अपने नाम को प्रचारित किए बिना संचालित किया जाने वाला 'संबोध' नामक यह उपक्रम भी लोकप्रिय और संघ प्रभावक रहा। वर्तमान में अमृतवाणी द्वारा संचालित इस उपक्रम में प्रसारण सहयोगी के रूप में जुड़ने हेतु श्री सुखराज सेठिया (दिल्ली) से मोबाइल नं.९८११०९९९१८ तथा श्री प्रकाश बैद (कोलकाता) से मोबाइल नं.९८३०१७०६१० से सम्पर्क किया जा सकता है।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 20-04-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

अहिंसा यात्रा का परिवर्तित पथ : फतेहगढ़ से बाव

परमाराध्य आचार्यवर ने बाववासियों पर अनुग्रहवृष्टि करते हुए बाव प्रवास के निर्धारित तीन दिनों में दो दिनों की वृद्धि की है। तदनुसार अहिंसा यात्रा का परिवर्तित पथ इस प्रकार रहेगा

२७, २८ अप्रेल	फतेहगढ़	५ मई	जन्डाला
२९ अप्रेल	मोडा	६ मई	इन्द्रवा
३० अप्रेल	फुलपारावाड	७ मई	भाभर
१ मई	रोजू	८ मई	एटा
२ मई	सांतलपुर	९ मई	माडका
३ मई	सीधाडा	१०-१४ मई	बाव
४ मई	कोरडा		

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व. श्रीमती गणपतिदेवी चोरड़िया (पुत्रवधू-स्व.श्री चांदमलजी चोरड़िया, धर्मपत्नी-स्व.श्री माणकचन्दजी चोरड़िया, छापर-कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र श्री बजरंग, विनोद, सुपौत्र पंकज, रीतेश, पीयूष, प्रपौत्र मनीत, प्रपौत्री मनस्वी चोरड़िया द्वारा प्रदत्त।

५१००/- स्व. श्रीमती तारालता अग्रवाल (धर्मपत्नी-श्री मोहनलालजी अग्रवाल सी.टी.एम., बुवानीखेड़ा-अहमदाबाद) की पुण्यस्मृति में उनके पारिवारिकजनों द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सायरबाई बरलोटा (धर्मपत्नी-स्व. श्री धनराज बरलोटा, गादाणा-बेंगलुरु) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र बाबूलाल, प्रकाशचन्द, गणपतराज, चन्दनमल बरलोटा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सज्जनदेवी बैद (पुत्रवधू-स्व.श्री महालचन्दजी बैद, धर्मपत्नी-स्व.गोविन्दराम बैद, छापर-काठमांडो) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू वीरेन्द्र-अर्चना, जितेन्द्र-शिल्पा, हिमांशु, राहिल द्वारा प्रदत्त।

२१००/- सुपौत्री अलीशा (सुपुत्री- देवांग-मल्लिका जैन) के शुभजन्म के उपलक्ष्य में श्री प्रवीणकुमार-कमलादेवी जैन, मंडार-अहमदाबाद) द्वारा प्रदत्त।

गांधीधाम में दीक्षा समारोह संपन्न

१५ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने गांधीधाम में मुमुक्षु नीता (फतेहगढ-माधापर) को समणी दीक्षा प्रदान की है। नवदीक्षित समणी का नाम समणी निश्चयप्रज्ञा रखा गया है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,
तेरापंथ भवन, पो. वाव-३८५ ५७५, जि. बनासकांठा (गुजरात)
मोबाइल नं. ०७६९८६५०४१० (गुजरात प्रवास में), ०९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**